

恨中录/闲中录



[恨中录/闲中录_下载链接1](#)

著者:惠庆宫洪氏

出版者:

出版时间:2010-3-28

装帧:平装

isbn:9788954608916

『』
, , ,
.
.

作者介绍:

郑炳说

首尔大学国语国文系教授

目录: 5

1 17

19

24

24 | 26 | 27 |

29 | 33 | 34 |

35 | 37 | 38 | 39 |

40 | 45 |

46 | 48 | 49 |

50 | 『』 53 | 54 | ‘’

60 | 61 | 62 | 66 |

67 | 68 | 69 | ,

75 | 77 | 79 |

83 | 86 | 87 |

88 | 89 | 91 | 92 |

95 | 97 |

98 | 99 | 105 | 108 |

111 | , 113 | 115 | 118 |

119 | 119 | 121 |

125 | 126 | 131 | 136 | 137 |

138 | 139 | 140 |

143 | 144 | 145 |

146 | 148 | 150 | 152

2 155

157

159

159 | 160 | 161 |

163 | 164 |

165 | 166 | 168 | 169 |

170 | 172 | ,

173 | 174 | 175 |

176 | 178 | 181 | 184 |

185 | 188 |

189 | 190 | 191 | 193 |

195 | 197 | 198 |

200 | 202 |

203 | 204 | 208 |

210 | 212 |

213 | 213 | 214 |

215 | 217 | 220 |

221 | 226 | 230 |

231 | 235 | 236 |
237 | 241 | 245 |
248 | 250 | 251 |
253 | 255
258
260
261 | 263 |
265 | 266
, 267
267 | 270 |
273 | 274
276
276 | 277
278
281
, 283
3 289
1 291
291
295
296 | 299 | 300 |
305 | 308 | 1804 309
314
316 | 320
323
326 | 329 | 『』
331 | 333 | 334 |
337 | , 341 | ,
344 | , 349
351
351 | 『』 352 |
355 | 356 | 357 |
358 | 365 | 366 |
366 | 368 |
368 | 369
371
372 | 375 |
378 | 379 | 380 |
382 | 383
385
387 | 390 |
391 | 393 |
394 | , 396
398
398 | 401 | 406 |
408 | 『』 409 | , 410 |
441 | 414 |
416
2 419
419
421
421 |
422 | 424 |
425 | 426 | 427 |

429 | 430 |
431 | 432 |
435 | 436 | 436 |
437 | 439 |
440 | , 444 |
445 | 447 | 448 |
450
, 455

471
472
481

1 22 16 | 2
? 22, 24 | 3 33
, 35 | 4 43 | 5 『』
46 48 | 6, 64,
67 | 7 92 ?
94 | 8,, 98 | 9 107
107 | 10 , 『』 111 | 11
? 115 | 12 , 118 | 13
122 | 14, 141 | 15 148 | 16
, 162 | 17, 164 | 18, 167
, 168 | 19 『』 ? 171 | 20
180 | 21 189 | 22, 200 | 23
206 208 | 24 ,
210 | 25 214 | 26 222 | 27
226 | 28, 252 | 29, 261 | 30 267 | 31
? 286 | 32 , 291
313 | 33, 309 | 34 『』 『』
317 | 35 ? 324 325 | 36
351 | 37 ? 373 | 38
381 | 39 『』 , 418 | 40 428
429
• • • • • (收起)

[恨中录/闲中录_下载链接1](#)

标签

历史

朝鲜半岛

评论

[恨中录/闲中录_下载链接1](#)

书评

尽管郑教授并不赞同我的看法，但是我还是坚持我的！ 1. 第21页.
“哀痛自哀痛，義理自義理”乃正祖之语。--按原文并未有说是“正祖之语”的表述。
这句话在实录中多次出现，首次出现是在《英祖实录》，英祖三十八年六月二十六日条。
。 壬午祸变后，洪凤汉向英祖上疏，感谢英祖保存...

[恨中录/闲中录_下载链接1](#)